



मौसी से मुलाक़ात

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

जब मुझे लगा कि आखिरकार हमारी बातचीत शुरू करने का वक़्त आ गया है, तभी उसने कमान सँभाल ली। “मेरे साथ उस दूसरे कमरे में चलो। मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूँ।”

“क्या?”

हम एक ऐसे हॉल में दाखिल हुए, जो लगभग मेरे मौजूदा अपार्टमेंट जितना बड़ा था। करीब एक सौ सत्तर वर्ग मीटर। उसके बीचोंबीच एक बिलियर्ड मेज़ रखी थी। उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे यह खेल आता है। क्या मैं खेल सकता हूँ। मैंने हाँ कहा। मैंने समझाया कि मुझे गोरिज़ियाना—इटली का पारंपरिक संस्करण—खास पसंद नहीं, और मैं अमेरिकी पूल को तरजीह देता हूँ। वह मुस्कुरा दी। “इसमें कोई शक नहीं। मुझे पहले से ही पता था।”

मैंने तुरंत मौक़े को लपक लिया। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने हर मैजेस्टी की खुफ़िया सेवा पर पैसा ख़र्च किया था, क्या उसने मेरी किताबें मुफ़्त में पढ़ी थीं, या फिर उसने बस मेरी माँ से मेरे बारे में जानकारी माँगी थी। उसने कोई जवाब नहीं दिया। या शायद उसने ख़ामोशी से जवाब दिया।

फिर वह मुझे एक लंबी मेज़ की ओर ले गई। उस पर छुरी-काँटों के सेट, मैनीक्योर किट, पेडीक्योर किट और तमाम निजी देखभाल की चीज़ें सजी थीं। सब कुछ चमकते इस्पात का बना था। हर एक टुकड़े को हर हफ़्ते चमकाया जाता था, ताकि उसकी आब बनी रहे। पर जिस चीज़ ने मेरा ध्यान खींचा, वह यह नहीं थी। हर वस्तु पर वही एक निशान था। दो तलवारें। वह ब्रांड। वह हस्ताक्षर। वह पहचान। विल्किंसन स्वॉर्ड।

मेरी रीढ़ में एक सिहरन दौड़ गई। पहली बार, मैं सचमुच समझा कि मैं कहाँ हूँ। मैं किसी मैनेजर का मेहमान नहीं था। मैं किसी अधिकारी का मेहमान नहीं था। मैं तो किसी कॉर्पोरेट किंवदंती का भी मेहमान नहीं था।

तभी मैंने कुछ स्त्रियों की आवाज़ें सुनीं, जो उसे पुकार रही थीं। “मौसी... मौसी... आप कहाँ हैं?” बिना किसी हिचक के, उसने जवाब दिया: “मैं अभी आई। मैं अपने भांजे के साथ हूँ। जिलेट के बेटे के साथ।”

उस पल मेरे मन में कोई संदेह बाक़ी नहीं रहा। मैं अपनी मौसी के घर में था।

हम उस दूसरे कमरे में लौट आए। सब जाने को तैयार थे। सब, सिवाय मेरे। मैगी ने मेरी बाँह थामी और कहा: “तुम्हें अपनी बेटी और अपनी दो नातिनों से मिलवाऊँ। इनमें से किसी की शादी नहीं हुई है। चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूँ। मुझे उम्मीद है कि इससे तुम्हें खुशी होगी।”

सच कहूँ तो, मैं पूरी तरह नशे में था। शराब के नहीं। जानकारी के। भावनाओं के। समय के। मैं अब उनमें से किसी को भी संभाल नहीं पा रहा था। और वह, दूसरी ओर, वह नन्ही-सी अंग्रेज़ बुढ़िया, एक भूकंप थी। मैं तुरंत सोचने लगा कि जवानी में वह कैसी रही होगी। और क्या कोई कभी उसे संभाल पाया होगा। जवाब खुद-ब-खुद आ गया। नहीं। वह इस सबसे परे थी। वह इस्पात की स्त्री थी।

हम एक वीरान कारख़ाने के सामने पहुँचे। वह रुकी।

ख़ामोशी से उसे देखा। फिर उसने कहा: “फर्नांदो। सब कुछ यहीं से शुरू हुआ। और अगर उन्होंने तुम्हें पहले जान लिया होता, तो आज भी हमारी कंपनी हमारी होती। ख़राब प्रबंधन और घमंडी फ़ैसलों की वजह से हमें इसे बेचने पर कभी मजबूर न होना पड़ता।”

उसकी बेटी। उसकी नातिनें। सब ख़ामोश। डॉमिनीक तक भावुक लग रहा था। फिर उसने कहा: “यह वही भावुक सैर है, जो यह बुजुर्ग महिला हमेशा अपने मेहमानों को प्रभावित करने के लिए कराती हैं। हमेशा वही अंग्रेज़ी रस्म।” पर इस बार वह किसी मेहमान से बात नहीं कर रही थी। वह अपने भांजे से बात कर रही थी।

जब सैर ख़त्म हुई, तो वे मुझे वापस मेरे होटल छोड़ आए। लौटने का अनुरोध मैंने ही किया था। एक ही दिन में इतनी सारी भावनाओं को जज़्ब करने के लिए मैं तैयार नहीं था। पर अगले दिन हम फिर मिलने वाले थे।

फर्दिनांदो फ्रेगा